संगम

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान रोपड़ की हिन्दी पत्रिका
जनवरी - अप्रैल 2021
मुद्रण संस्करण 03 अंक 01

निदेशक का संदेश

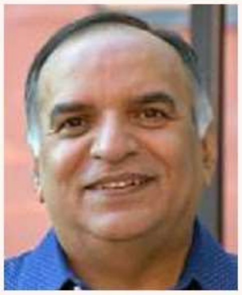

प्रिय साथियों,

हम आशा करते है कि मेरे इस संदेश को पढ़ रहे आप सभी, आपका परिवार तथा मित्र–परिवार स्वस्थ्य एवं सुरक्षित है। जैसा कि आप सभी को ज्ञात है, भा.प्रौ.सं. रोपड़ के निदेशक के रुप में यह माह मेरे कार्यकाल का शुरुवाती माह है।

अगले कुछ सप्ताह में हम भा.प्रौ.सं. रोपड़ को उच्चतर शिक्षा के लिए पसंदीदा विकल्प बनाने के लिए एक नीतिबद्ध योजना विकसित करने की दिशा में मिलकर कार्य करेंगे।

हम प्रचालन के मुद्दों पर तथा अध्यापन, शिक्षण एवं अनुसंधान के क्षेत्र में एक सर्वश्रेष्ठ संस्थान के रुप में भा.प्रौ.सं. रोपड़ को विश्व स्तर पर पहचान देने हेतु विभिन्न तरीकों एवं कार्य–नीति की पहचान पर अधिक ध्यान केंद्रित करेंगे। मुझे आशा है कि आगामी वर्षों में हमारा संस्थान अपनी ऊंचाइयों को प्राप्त करेगा।

हांलाकि हम जानते है कि यह महामारी निरंतर रुप से शिक्षा एवं स्वास्थ्य देखभाल प्रणालियों के साथ साथ इन्हें प्रदान करने वाले संस्थानों को भी चुनौतियां दे रही है। हम इस समय और इस कठिन परिस्थिति में विज्ञान और प्रौद्योगिकी के महत्व को निरंतर रुप से समझ रहे हैं। हम अपने इस अप्रैल न्यूजलेटर के माध्यम से तथा हमारे अधिशासी मंडल की ओर से, उन सभी लोगों के प्रति हार्दिक आभार व्यक्त करते हैं, जो सैकड़ों हजारों रोगियों की भलाई में सुधार करने के लिए अनवरत् रुप से कार्यरत हैं।

हम उस विश्वास की सराहना करते हैं जो हमारे सभी हितधारकों ने हम पर और हमारे कार्य पर रखा है। हम प्रतिदिन बेहतर होने का प्रयास करेंगे और अपने ध्येय और दृष्टि को प्राप्त करने हेतु दृत गति से तत्पर रहेंगे। जब हम अपने लक्ष्य की ओर अग्रसर होते हैं तब हमें यह यह अवश्य ध्यान रखना चाहिए कि हम विश्व के प्रति हमारी अधिक देनदारी बनती है जितना कि हमने उससे प्राप्त किया है। हम में से प्रत्येक एक ऐसे ब्रह्मांड के निर्माण में मदद करने के लिए अपना योगदान दे सकता है और करना चाहिए जो हमारी आने वाली पीढ़ी का पोषण करेगा।

जय हिंद !

प्रो. राजीव आहूजा
निदेशक, भा.प्रौ.सं. रोपड़

भा.प्रौ.सं. रोपड़ नए निदेशक का स्वागत करता है!

प्रो. राजीव आहूजा ने भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान रोपड़ (भा.प्रौ.सं. रोपड़) के नए निदेशक के रुप में कार्यग्रहण किया है। प्रो. आहूजा ने प्रो. पी. के. रैना, कार्यवाहक निदेशक, भा.प्रौ.सं. रोपड़ द्वारा कार्यभार ग्रहण किया। संस्थान में निदेशक का कार्यकाल कार्यग्रहण की तिथि से पांच वर्षों का है। संस्थान के पूर्व निदेशक प्रो. सरित कुमार दास ने पांच वर्षों का कार्यकाल पूर्ण किया था।

राजीव आहूजा उप्पसला विश्वविद्यालय, स्वीडन में अभिकलनीय पदार्थ विज्ञान के प्राध्यापक रह चुके है। वह स्वीडन में सबसे अधिक उद्धृत शोधकर्ताओं में से एक हैं। इन्होंने वर्ष 1992 में भा.प्रौ.सं. रुड़की, भारत से विद्या वाचस्पति की उपाधि ग्रहण की। इसी वर्ष, वें पोस्ट डॉक्टोरल फैलो के रुप उप्पसला विश्वविद्यालय से जुड़े। वें वर्ष 1996 में सहायक प्राध्यापक, वर्ष 2002 में सह प्राध्यापक तथा अंत में 2007 में प्राध्यापक के पद पर नियुक्त हुए। इनका मुख्य विषय–क्षेत्र ऊर्जा जैसे कि बैटरी, हायड्रोजन भंडारण एवं उत्पादन, संवेदक के साथ साथ उच्च दाब भौतिकी के साथ अभिकलनीय पदार्थ विज्ञान है। इनके 975 वैज्ञिनिक शोध–पत्र विद्वत समीक्षा पत्रिकाओं, 33600 से अधिक उद्धरण जिनमें से 100 से अधिक उच्च प्रतिष्ठित पत्रिकाओं में प्रकाशित है।

हाल ही में इन्हें अमेरिकन फिजिकल सोसायटी (एपीएस), संयुक्त राज्य अमेरिका द्वारा एपीएस–फैलो के रुप में चयनित किया गया तथा रॉयल सोसयटी आफ कैमिस्ट्री (इग्लैंड) द्वारा जरनल आफ मटैरियल कैमिस्ट्री एण्ड मटैरियल एडवांस के सलाहकार मंडल में नियुक्त किया गया। इन्हें न्यू आर्लीन्स, लुईजियाना में 13–17 मार्च 2017 को एपीस (APS) मार्च मीटिंग हेतु बेलर लेक्चररशिप से भी पुरस्कृत किया गया था। इन्हें केवीए (रॉयल स्वीडीश एकेडमी आफ सायंसेज) द्वारा 2011 हेतु वॉलमार्क पुरस्कार से भी सम्मानित किया गया साथ ही, इन्हें केवीएस द्वारा एडर लीली एण्ड सेवल थेरस पुरस्कार और बैंझीलस पुरस्कार पहले से ही प्राप्त है। प्रो. आहूजा स्वीडीश रॉयल सोसायटी आफ सायंसेज, यूरोपियन उच्च प्रभाव अनुसंधान समूह के साथ साथ उच्च प्रभाव विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी उन्नति हेतु अंतर्राष्ट्रीय संगठन के कार्यकारी मंडल के चयनित सदस्य हैं।

प्रो. आहूजा ने 30 पीएच.डी. शोधार्थियों, 35 से पोस्टडॉक का पर्यवेक्षण किया है तथा इन्होंने संयुक्त राज्य अमेरिका से एसएसएफ एवं डीओई, कैनड़ा से एनआरसी, इस्टोनिया से ईएसएफ, द नीदरलैंड से एसटीडब्ल्यु, पोलैंड से नैशनल सायंस सेंटर, यूरिपियन सायंस फाउंडेशन, स्टाबोर्ग, फ्रांस, जैसे कई अंतर्राष्ट्रीय निधिदेय एजेंसियों हेतु समीक्षक के रुप में निरंतर दायित्व का निर्वहन किया है।

प्रो. आहूजा को भा.प्रौ.सं. इंदौर, 2019 में शैक्षणिक एवं अनुसंधान सहयोग को बढ़ावा देने हेतु योजना पुरस्कार से, भा.प्रौ.सं. इंदौर में मा.सं.वि.मं., भारत के शैक्षणिक नेटवर्क की वैश्विक पहल पुरस्कार से (जनवरी 2018) तथा पुणे विश्वविद्यालय में मा.सं.वि.मं., भारत के शैक्षणिक नेटवर्क की वैश्विक पहल पुरस्कार (26–30 दिसं. 2016) से सम्मानित किया गया।

द इमर्जिंग इनोकोमिक्स यूनिवर्सिटी रैंकिंग 2020 में शीर्ष 80 में भा.प्रौ.सं. रोपड़ ने 71वां स्थान प्राप्त किया।

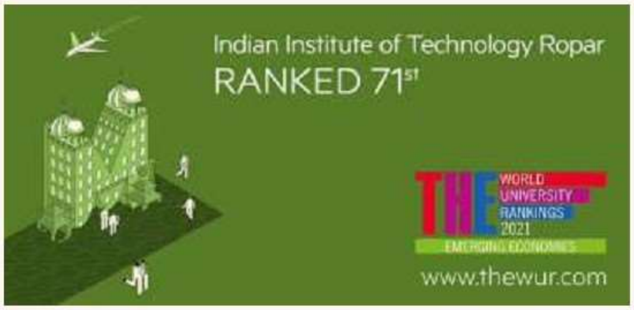
Indian Institute of Technology Ropar
RANKED 71st
THE
WORLD UNIVERSITY RANKINGS 2021
EMERGING ECONOMIES
www.thewur.com

New Kendriya Vidyalaya to start in March at IIT Ropar campus

भा.प्रौ.सं. रोपड़ में **केंद्रीय विद्यालय** ने दिनांक 15 मार्च 2021 से प्रचालन शुरु किया। केंद्रीय विद्यालय के प्रभारी प्रधानाचार्य के रुप में श्री अनिल कुमार ने कार्यग्रहण किया।

भा.प्रौ.सं. रोपड़ के अनुसंधानकर्ताओं द्वारा ड्रोन के साथ संचार उपकरण की संकल्पना के साथ आपातकालीन स्थितियों के दौरान आपदा पूर्व प्रबंधन संचार का निर्माण।

IIT team's drone for post-disaster help

भा.प्रौ.सं. रोपड़ अनुसंधानकर्ता कृषि क्षेत्रों में जानवरों के हमलों से फसल की सुरक्षा करने की दिशा में ध्वनिक विकर्षक प्रणाली (एआरएस) की अवधारणा लेकर आए हैं।

समझौता ज्ञापन

भा.प्रौ.सं. रोपड़ और हरियाणा सिंचाई अनुसंधान एवं प्रबंध संस्थान ने हरियाणा राज्य हेतु जल क्षेत्रों पर राज्य विनिर्दिष्ट कार्य–योजना की तैयारी हेतु करार पर हस्ताक्षर किए।

भा.प्रौ.सं. रोपड़ (कृषि एवं जल प्रौद्योगिकी विकास हब अथवा संक्षिप्त में अवध) और पंजाब अभियांत्रिकी महाविद्यालय के बीच समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर हुए। अवध पंजाब अभियांत्रिकी महाविद्यालय के स्नातक एवं स्नातकोत्तर विद्यार्थियों को फैलोशिप और अनुसंधान सहायता प्रदान करेगा।

पुरस्कार एवं मान्यताएं

डॉ. राजेश कुमार, सहायक प्राध्यापक, जैवचिकित्सा अभियांत्रिकी विभाग को "एम.आई.टी.– एम.आई.एस.टी.आई. वैश्विक बीज निधि पुरस्कार" से सम्मानित किया गया। डॉ. राजेश ने सहयोगात्मक अनुसंधान गतिविधि और विद्यार्थियों के विनिमय के साथ–साथ एम.आई.टी. तथा आई.आई.टी. रोपड़ के संकाय सदस्यों के अदान–प्रदान के अवसरों की समीक्षा की।

डॉ. नेहा सरदाना, सहायक प्रध्यापक, भा.प्रौ.सं. रोपड़ को भारतीय राष्ट्रीय युवा विज्ञान अकादमी 2021–25 की सदस्यता हेतु चयनित किया गया।

Congratulations

भा.प्रौ.सं. रोपड़ की प्रौद्योगिकी स्नातक की छात्रा हरजोत कौर को एशियाई एवं अंतर्राष्ट्रीय संपर्क 2021 सम्मेलन के लिए हावर्ड यूनिवर्सिटी कॉलेज परियोजना हेतु चयनित किया गया।

सोलर डीकेथलॉन इंडिया 2021 के अंतिम दौर हेतु प्रभजोत सिंह, आदित्य कुमार, दिक्षांत वत्स, दीपाली गायकवाड, रितेश, विक्रांत जगलान, मझहर, नलीन, सुर्यांश, हार्दिक एवं महक गुप्ता को चयनित किया गया।

अंतरराष्ट्रीय कांफ्रेंस में आइआइटी रोपड़ के चार विद्यार्थी लेंगे हिस्सा

भा.प्रौ.सं. रोपड़ के प्रौद्योगिकी स्नातक विद्यार्थी श्री कमल धुल, सुश्री हरजोत कौर, सुश्री पंखुड़ी सक्सेना, श्री राहुल भारती को प्रतिष्ठित हावर्ड एचपीएआईआर सम्मेलन 2021 हेतु चयनित किया गया है।

हमारे दो डॉक्टरेल शोधार्थी सुश्री यशस्वी बंसल और श्री कपिल ने डॉक्टोरल श्रेणी के अंतर्गत पॉवरग्रीड पोसोको पुरस्कार 2021 अपने नाम किया जिसमें 01 लाख रुपये का नकद पुरस्कार एवं प्रमाणपत्र का समावेश है।

भा.प्रौ.सं. रोपड़ में 72वां गणतंत्र दिवस समारोह का आयोजन

आईआईटी रोपड़ में 72वां गणतंत्र दिवस बड़े ही उत्साह के साथ मनाया गया।

देशभक्ति का जोश और तिरंगे की शानदार सजावट के साथ पूरा परिसर देशभक्ति की रंग में रंग गया था। इस अवसर पर सद्भावना दौड़ का भी आयोजन किया गया।

संसाधन विकास

जनवरी 2021 से अप्रैल 2021 के दौरान चरण 1 बी की इमारतें जो पूरी हो चुकी हैं और संस्थान द्वारा अधिग्रहित की जा रही हैं, वे आगंतुक छात्रावास (अतिथि गृह) और परिसर विद्यालय हैं। साथ ही केंद्रीय अनुसंधान सुविधा (सीआरएफ) भवन का निर्माण–कार्य भी पूर्ण हो चुका है। पुस्तकालय एवं व्याख्यान कक्ष तथा प्रेक्षागृह 85% पूर्ण हो चुका है तथा द्वितीय भोजनकक्ष जो कि पूर्ण है और संस्थान द्वारा अपने अधिकार में लेने हेतु सज्जित है। चरण 1 बी का मलजल उपचार संयंत्र पूर्ण हो चुका है।

केंद्रीय अनुसंधान सुविधा भवन

भोजन कक्ष

पुस्तकालय एवं व्याख्यान कक्ष

सुपर एकेडमिक ब्लॉक

संकाय की कलम से...............!

सुविधा और संबंध

डॉ राकेश कुमार मौर्य
एसोसिएट प्रोफेसर
यांत्रिक अभियांत्रिकी विभाग
भा.प्रौ.सं. रोपड़

हर मनुष्य निरंतर सुख एवं समृद्धि पूर्वक जीना चाहता है। हम सही समझ और सही भाव से सुखी होते हैं। स्वयं में ज्ञान व समाधान के आधार पर ही सही समझ और सही भाव और उसकी निरंतरता सुनिश्चित होती है। समाधान के लिए समझ, संबंध, और सुविधा तीनों की स्पष्टता की आवश्यकता है।

अभी हम ऐसा मानते हैं कि सुविधा से संबंध सुनिश्चित हो जायेगा। इस आधार पर सारा समय और प्रयास सुविधा के लिए लगाते है। सुविधा के आधार पर संबंध में निहित मूल्यों को सुनिश्चित करने की कोशिश करते हैं जो कि होता नहीं है। उदाहरण के लिए, हम सुविधा के आधार पर सम्मान पाने या देने का प्रयास करते है, इस आधार पर सारा समय सुविधा के लिए लगाते है परन्तु सुविधा से या तो सम्मान मिलता नहीं हैं या मिलता है तो थोड़े समय के लिए और उस समय भी हमको भास आभास होता रहता हैं कि सम्मान का आधार सुविधा हैं। कुल मिलाकर सुविधा के आधार पर सम्मान के भाव की निरंतरता नहीं हो पाती। हमको पता चलता है कि हमारा सम्मान न होकर हमारे पैसे या सुविधा का सम्मान हो रहा है।

आप किसी से पूछकर देखिए कि आपके परिवार में ज्यादा दुख सुविधा

के अभाव में है या संबंध का निर्वाह (ठीक व्यवहार) न होने के कारण? ज्यादातर लोगों का उत्तर आता है, संबंध का निर्वाह न हो पाने के कारण। फिर यह पूछने पर कि आप कितना समय और प्रयास सुविधा के लिए लगाते हैं और कितना संबंध को समझने व निर्वाह के लिए? ज्यादातर लोग अपने में चकित रह जाते हैं कि मुख्यतः समय और प्रयास सुविधा के लिए ही लग रहा है। अभी हम मनुष्य के जीने को देखे तो सारा शिक्षण–प्रशिक्षण और प्रयास सुविधा पर ध्यान देने का है। जबकि सुविधा के अभाव की अपेक्षा व्यवहार में व्यतिरेक या अमानवीय आचरण के कारण ज्यादा दुख है। इसलिए संबंध या व्यवहार को समझना और निर्वाह करना आवश्यक है।

सुविधा के आधार पर संबंध की निरंतरता नहीं होती है क्यों कि इसके आधार पर मिलने वाले भाव या सुख की निरंतरता नहीं होती है। उदाहरण के लिए, अभी हम कपड़े, गाड़ी या किसी अन्य भौतिक वस्तु के आधार पर सम्मान पाना चाहते है। दूसरा व्यक्ति पहली बार देखकर हमसे उसके बारे में पूछता है तो हमें अच्छा लगता है। दुबारा हमारे उसी कपड़े या गाडी को वो व्यक्ति ध्यान नहीं देता है तो हम परेशान होते हैं। इस आधार पर हमको लगता है कि अनन्त कपड़े की आवश्यकता है क्योंकि ध्यान पाने या प्रभावित करने के लिए हर बार अलग–अलग पहनना पड़ता है।

सुविधा के आधार पर दूसरा व्यक्ति प्रभाव एवं दबाव में आ सकता है लेकिन संबंध में आश्वस्ति नहीं होती है। आश्वस्ति नहीं होती है तो कहीं न कहीं शंका रहती है और यदि शंका है तो भय होता है, भय होता है तो हम दुखी होते रहते हैं। संबंध में आश्वस्ति पूर्वक जी कर ही हम सुखी होते है, उसी में सुख की निरंतरता होती है। जहाँ कहीं भी संबंध में आश्वस्ति का अभाव होता है या शर्त के आधार पर संबंध को स्वीकारा जाता है वहीं हम आशंका और भय से घिर जाते हैं, जो हमारे दुख का कारण होता है।

संबंध में आश्वस्ति का आधार संबंध में निहित मूल्यों को पहचानना, उनका निर्वाह करना, मूल्यांकन करना उसके आधार पर स्वयं सुखी होना दूसरे को सुखी करना होता है। इसी को संबंध में न्याय नाम दिया है। संबंध में मूल्यों को पहचानने जाते है तो नौ मूल्य समझ में आते है। ये मूल्य क्रमशः विश्वास, सम्मान, स्नेह, ममता, वात्सल्य, श्रद्धा, गौरव, कृतज्ञता और प्रेम है। इन मूल्यों को स्थापित मूल्य नाम देते है क्योंकि इन मूल्यों की स्वीकृति व अपेक्षा हममें निरंतर बनी रहती है, इसको बनाना नहीं पड़ता है।

संबंध और मूल्यों को समझने के लिए मानव को समझना आवश्यक है। मानव, जीवन (मैं, self) और शरीर के सहअस्तित्व के रूप में है। मानव को जीवन और शरीर के रूप में देखने पर पता चलता है कि संबंध जीवन (मैं) का जीवन (मैं) से है न कि शरीर का शरीर से। मानव–मानव का संबंध जो है वो मुख्य रूप से जीवन–जीवन का सम्बन्ध है। जैसे जब पिता जी को पिता जी कहते है तो हम उनके शरीर को नहीं उनके जीवन को कहते है। इस प्रकार यह स्पष्ट होता है कि संबंध में भाव जीवन का जीवन के प्रति है। ऐसा भाव मेरे में होता है तो मैं सुखी होता हूँ, इन भावों में परस्परता में व्यक्त करता हूँ तो दूसरा भी सुखी होता है। इस आधार पर हम नौ भावो को पहचानकर, उनका निर्वाह और मूल्यांकन करके खुद सुखी होते है और दूसरे को सुखी करते है।

इन भावों में विश्वास को आधार मूल्य कहा है। क्यों कि यदि विश्वास का भाव हममें नहीं होता हैं तो बाकी भाव सुनिश्चित नहीं होते हैं, अर्थात संबंध की स्वीकृति ही नहीं होती है। इसलिए सबसे पहले विश्वास को सुनिश्चित करना विश्वास है। विश्वास का अर्थ है आश्वस्त होना। समझ के आधार पर विश्वास होता है. जहाँ भी हमारी समझ पूरी पड़ती है वहाँ हम विश्वास कर पाते हैं। मानव के साथ विश्वास होने के लिए मानव की समझ आवश्यक है। मानव का जीवन के आधार पर आकलन करने पर पता चलता है की दूसरे का भी लक्ष्य, कार्यक्रम, क्षमता और क्रिया मेंरे जैसी है। इस आधार पर हम दूसरे को स्वीकार पाते हैं। दूसरा हमारे सुख समृद्धि के अर्थ में है ऐसा स्पष्ट होता है तो विश्वास का भाव बनता है। जब हम अपनी सहज स्वीकृति के आधार पर जाँचकर देखते हैं और पाते हैं कि हमारी सहज स्वीकृति स्वयं सुखी होने व दूसरे को सुखी करने की है तो हमें भी यह स्पष्ठ होता है कि दूसरे की सहज स्वीकृति भी स्वयं सुखी होने और मुझे सुखी करने की है। अर्थात, दूसरा हमारे सुख–समृद्धि के अर्थ में है तो ही हम दूसरे के प्रति आश्वस्त हो पाते है और उसके साथ विश्वास का निर्वाह कर पाते हैं। यही भाव हमारे संबंध का आधार है। जब हम इसको सुनिश्चित कर पाते हैं तो हम दूसरे को संबंधी के रूप में स्वीकार पाते हैं।

इसी प्रकार सम्मान के भाव के संदर्भ में हम दूसरे का जीवन के स्तर पर पूर्णता के अर्थ में आकलन करते हैं। पूर्णता को हम चार आयाम में देखते हैं– अनुभव, विचार, व्यवहार, कार्य। चारों आयाम में पूर्णता के आधार पर दूसरे का ठीक–ठीक आकलन कर पाते हैं इसी भाव को सम्मान का भाव कहा हैं। इसी को दूसरी भाषा में कहें तो व्यक्तित्व व प्रतिभा के स्वीकृति और उसका प्रकाशन ही सम्मान है।

इन मूल्यों के आधार पर संबंध की स्वीकृति के साथ हम अन्य सभी मूल्यों को भी पहचान पातें है और उनका निर्वाह कर पातें हैं। इस प्रकार हम संबंध को निर्वाह करने के योग्य हो जाते है। दूसरे से इन भावों की मांग करने के बदले भावों को देनें के योग्य हो जाते है और संबंध का ठीक ठीक निर्वाह कर पाते हैं।

संबंध के निर्वाह का आधार सुविधा न होकर संबंध की सही समझ हैं। सही समझ के आधार पर हम संबंध के ठीक ठीक निर्वाह कर पाते है। सही समझ एवं संबंधपूर्वक जीते हुए निरंतर सुखी रहते है। ऐसा करते हुए सुविधा की आवश्यकता को पहचान पाते है और श्रमपूर्वक उत्पादन करके समृद्धि को सुनिश्चित कर पाते है। सही अर्थ में देखें तो सही समझ एवं सही संबंध पूर्वक जीते हुए परिवार में सुविधा की आवश्यकता को ठीक–ठीक पहचान पाते हैं और परिवार में उत्पादन करके आवश्यकता से अधिक सुनिश्चित कर पाते हैं। अतः परिवार में ही समाधान और समृद्धि प्रमाणित हो पाती है।

सुविधा से संबंध सुनिश्चित नहीं होता है बल्कि सही समझ के आधार पर सही संबंध होता है। सही समझ और संबंध पूर्वक जीते हुए हम सुविधा की आवश्यकता को पहचान पाते हैं और पूरा कर समृद्ध हो पाते है। इतना ही नहीं संबंध का निर्वाह करते हुए दूसरे के भी सुख समृद्धि का स्रोत बन पाते हैं।

ध्यान दें तो यह भी स्पष्ट होता है कि एक बार हमें संबंध, समझ में आता है, संबंध में निहित मूल्य पहचान में आने लगते है, उसके निर्वाह, मूल्यांकन से उभय सुख सुनिश्चित होने लगता है, तो हम और फैलकर जीने का प्रयास करते है। ऐसे भी हमारी सहज स्वीकृति तो एक के साथ, अनेक के साथ, हरेक के साथ संबंधपूर्वक जीने की है। जैसे जैसे हमारी योग्यता बढती जाती है, हमारे संबंध की स्वीकृति और भाव और ज्यादा लोगों के लिए होने लगती है। इस प्रकार से परिवार से प्रारंभ कर विश्व परिवार तक संबंध को स्वीकारने व भाव बनाये रखने को अपने में सुनिश्चित कर पाते हैं। यही प्रेम का भाव है, और यह प्रेम का भाव ही अखण्ड समाज का आधार बनता है।

स्रोत : मध्यस्थ दर्शन – सह–अस्तित्ववाद, प्रणेता – ए. नागराज

पूर्व निदेशक प्रो. सरित कुमार दास का विदाई समारोह

भा.प्रौ.सं. रोपड़ परिवार ने संस्थान के निदेशक प्रो. सरित कुमार दास को इनके कार्यकाल के समाप्ति पर भावुकतापूर्ण विदाई दी।

इस बिदाई समारोह में भा.प्रौ.सं. रोपड़ परिवार के विभिन्न वर्गों के सदस्यों जैसे कि स्टाफ एवं संकाय सदस्यों ने प्रो. दास के साथ विगत वर्षों के दौरान अपने कार्यानुभव का स्मरण करते हुए अपनी भावनाओं को सभी के समक्ष रखा।

इस अवसर पर संस्थान के कार्यकारी निदेशक प्रो. पी. के. रैना ने प्रो. दास की कार्य–कुशलता, उत्तम प्रबंधन कौशल को प्रमाणित करते कुछ स्मरणीय क्षणों को सभी के साथ अपने संबोधन के माध्यम से साझा किया।

अंत में, प्रो. दास ने अपने कार्यकाल अवधि माह जून, 2015 से माह फरवरी, 2021 के दौरान सभी उपलब्धियों, अवरोधों एवं समस्याओं को याद करते हुए आईआईटी रोपड़ परिवार के सभी सदस्यों का उनके कर्मठ सहयोग हेतु अपनी कृतज्ञता व्यक्त करते हुए संस्थान के उज्जवल भविष्य की कामना के साथ अपने संबोधन को समाप्त किया।

कोविड़ 19 आपदा के दौरान संस्थान का कार्यान्वयन

आनलाइन पाठ्यक्रमों का विवरणः–

आईआईटी रोपड़ ने 24 मार्च 2020 को घोषित किए गए राष्ट्रीय लॉकडाउन के पहले ही पाठ्यक्रमों और कक्षाओं की सुविधाओं के संबंध में अग्रसक्रिय कदम उठाएं थे। माह मार्च,2020 से भा.प्रौ.सं. रोपड़ के संकाय सदस्यों ने ई–मेल और वीडियो कक्षाओं आदि के माध्यम से विद्यार्थियों के आनलाइन पाठयक्रमों की शुरुवात कर दी थी। संस्थान के सभी विभागों और संबधित संकायों ने सभी पाठ्यक्रमों की आनलाइन पाठ्यक्रम सागग्री प्रविष्ट करना शुरु कर दिया था। माह अप्रैल 2020 तक सभी विभागों में लगभग सभी पाठ्यक्रम सफलतापूर्वक आनलाइन माध्यम से चल रहे थे। इसका प्रतिफल यह था कि माह अप्रैल, 2020 तक लगभग सभी लेक्चर आनलाइन अपलोड़ किए जा चुके थे। विद्यार्थियों के अध्ययन में किसी भी प्रकार से अवरोध उत्पन्न न हो इस उद्देश्य के साथ इन प्रयासों को शुरु किया गया था जो वर्तमान तक सफलतापूर्वक कार्यान्वित किए जा रहे हैं।

संशोधित शैक्षणिक कैलेंडर की तैयारीः–

कोविड 19 को ध्यान में रखते हुए दिनांक माह मार्च, 2020 को वीडियो कांफ्रेंसिंग के माध्यम से सेनेट की बैठक आयोजित की गई जिसमें कई सदस्यों ने उपस्थिति दर्ज की। इस बैठक में कोविड 19 की चुनौतियों को ध्यान में रखते हुए शैक्षणिक कैलेंडर में संशोधन, चल रहे सेमेस्टर का पुनःआरंभ, सेमेस्टर परीक्षाओं का आयोजन आदि बिंदुओं पर विस्तार से चर्चा हुई तथा भविष्यिक कार्यनीति पर निर्णय हुए।

कोविड 19 के संदर्भ में अनुसंधान पहलः–

भा.प्रौ.सं. रोपड़ ने राष्ट्रीय महत्व के संस्थान के रुप में स्वयं को चरितार्थ करते हुए कोविड 19 के रोकथाम को केंद्र में रखते हुए कई प्रकार के अनुसंधानों पर बल दिया। अनुसंधान पहलों के रुप में शोधार्थियों की सहायता से संकाय सदस्यों/वैज्ञानिकों द्वारा कई सफल अनुसंधान के तौर पर डोफिंग यूनिट, यूव्ही–सी निर्जीवाणुकरण पेटी, निगेटिव प्रेशर रुम, कमल लागत संवातक, रोकथाम पेटी, सार्स रोगियों के लिए सस्ता, सघन और संक्रमण मुक्त बीआईपीएपी नकाब, मेडी सारथी और कृत्रिम बुद्धिमत्ता शक्ति चालित ट्राली तथा कोविड 19 संदिग्धों की पहचान हेतु इंटिलिजेंट इन्फ्रारेड विजन सिस्टम आदि को देखा जा सकता है।

विद्यार्थियों के लिए गुणवत्तापूर्ण भोजनः–

संस्थान तथा संबंधित अधिकारी समय–समय पर यह सुनिश्चित करते है कि सभी विद्यार्थियों को गुणवत्तापूर्ण भोजन एवं खाद्य पदार्थ मिलें।

परिसर में सामाजिक दूरी बनाएं रखने की दिशा में महत्वपूर्ण कदमः–

स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय, मानव संसाधन विकास मंत्रालय, श्रम मंत्रालय तथा पंजाब सरकार द्वारा समय–समय पर जारी दिशा–निर्देश एवं परामर्श के आधार पर संस्थान परिसर में सामाजिक दूरी बनाएं रखते हुए दिशा–निर्देश समय–समय पर जारी किए जा रहे है।

विद्यार्थियों हेतु मनोवैज्ञानिक परामर्शः–

विद्यार्थियों हेतु संस्थान में दो परामर्शदाता है जो प्रत्यक्ष तथा आनलाइन मोड़ से परामर्शी सत्र के माध्यम से विद्यार्थियों को परामर्शी सुविधा प्रदान करते है।

अभिनंदन

भा.प्रौ.सं. रोपड़ के तीन कर्मचारिगण हिंदी टाइपिंग परीक्षा में प्रथम विशेष श्रेणी में उत्तीर्ण

केन्द्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा आयोजित किए गए हिंदी शब्द संसाधन (हिंदी टंकण) पत्राचार प्रशिक्षण कार्यक्रम (59वां सत्र) (अवधि 01 फरवरी 2020 से माह जुलाई 2020) की दिनांक 03 नवंबर 2020 को संपन्न परीक्षा में भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान रोपड़ के निम्न 03 सदस्य विशेष प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण हुए:–

श्री दिवाकर शर्मा
वरिष्ठ सहायक
भंडार एवं क्रय अनुभाग

श्री गुरदीप सिंह
कनिष्ठ अधीक्षक
विद्यार्थी मामले अनुभाग

श्री पुनीत गर्ग
सहायक कुलसचिव
विद्यार्थी मामले अनुभाग

इसी के साथ वर्तमान तक संस्थान के 10 सदस्य इस प्रशिक्षण को सफलतापूर्वक संपन्न एवं उत्तीर्ण कर चुके है।

साथ ही हिंदी शब्द संसाधन एवं हिदी टंकण पत्राचार प्रशिक्षण सत्र 01 फरवरी 2021 से जुलाई 2021 हेतु निम्न 23 सदस्यों का नामांकन केन्द्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा स्वीकृत कर निम्न कुल 23 सदस्य उक्त प्रशिक्षण हेतु पंजीकृत किए गए है:

श्री रविंदर सिंह, वरिष्ठ सहायक	श्री दलजीत सिंह सैनी, वरिष्ठ सहायक (लेखा)
श्री नवीन, वरिष्ठ सहायक	सुश्री निधि सिन्हा, कनिष्ठ सहायक लेखा
सुश्री अमृत कौर, वरिष्ठ सहायक	सुश्री मनदीप कौर, कनिष्ठ सहायक
सुश्री परविंदर कौर, कनिष्ठ सहायक	श्री सुमित राणा, कनिष्ठ सहायक
सुश्री नेहा डण्ढारे, कनिष्ठ सहायक	सुश्री रुबल बत्ता, कनिष्ठ सहायक
सुश्री जसप्रीत कौर, कनिष्ठ सहायक	श्री विपिन कुमार, कनिष्ठ प्रयोगशाला सहायक
सुश्री शीतल भोला, कनिष्ठ सहायक	सुश्री सानू उस्मानी, कनिष्ठ सहायक
श्री आशीष गौड़, कनिष्ठ सहायक	श्री गगनदीप सिंह, कनिष्ठ सहायक लेखा
श्री नवीन कुमार, कनिष्ठ लेखा अधिकारी	श्री ललित कुमार, कनिष्ठ लेखा अधिकारी
श्री विपिन कुमार, लेखा अधिकारी	श्री गौरव दत्ता, कनिष्ठ लेखा अधिकारी
सुश्री रीतिका, कनिष्ठ अधीक्षक	श्री अभिनव राज, कनिष्ठ अभियंता (विद्युत)
श्री संजीव कुमार भारद्वाज, कनिष्ठ अभियंता (सिविल)	

भा.प्रौ.सं. रोपड़ में हिंदी टाइपिंग प्रशिक्षण कार्यक्रम के 61 वें सत्र हेतु चार दिवसीय ऑनलाइन आंतरिक प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन

(दिनांक 15 मार्च से 18 मार्च 2021)

आंतरिक प्रशिक्षण कार्यक्रम का लाभ लेते हुए प्रशिक्षणार्थी

केन्द्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा आयोजित किए जा रहे हिंदी शब्द संसाधन (हिंदी टंकण) पत्राचार प्रशिक्षण कार्यक्रम (61 वां सत्र) हेतु भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान रोपड़ के पंजीकृत 23 सदस्यों की माह जुलाई 2021 में होने वाली परीक्षा को केन्द्र में रखते हुए चार दिवसीय ऑनलाइन आंतरिक प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

इस ऑनलाइन आंतरिक प्रशिक्षण कार्यक्रम में प्रशिक्षक के रुप में श्री अरविंद कुमार, सहायक निदेशक, हिंदी शिक्षण योजना, चण्डीगढ़ को आमंत्रित किया गया था।

इस ऑनलाइन आंतरिक प्रशिक्षण कार्यक्रम को आरंभ करते हुए संस्थान के हिंदी अधिकारी श्री लगवीश कुमार ने श्री अरविंद कुमार, सहायक निदेशक, हिंदी शिक्षण योजना, चण्डीगढ़ का स्वागत करते हुए इस बात का उल्लेख किया कि वर्ष 2020 में इसी हिंदी टाइपिंग प्रशिक्षण के 59वें सत्र हेतु श्री अरविंद कुमार जी के मार्गदर्शन जो आंतरिक प्रशिक्षण कार्यक्रम संपन्न हुआ है। जिसके फलस्वरुप संस्थान के तीन सदस्य नवंबर 2020 में संपन्न परीक्षा में विशेष प्रथम श्रेणी में अपना स्थान सुनिश्चित कर पाने में सक्षम हुए।

इस चार दिवसीय आनलाइन आंतरिक प्रशिक्षण कार्यक्रम में संस्थान के 23 पंजीकृत सदस्यों ने ''हिंदी इनस्क्रिप्ट कुंजीपटल'' पर टाइपिंग करना, हिंदी में सारणी प्रारुप बनाना, हिंदी में विभिन्न आदेश, पत्रों और ज्ञापन को बनाना तथा हस्तलेख आदि का अभ्यास किया।

इस ऑनलाइन आंतरिक प्रशिक्षण कार्यक्रम का दिनांक 18 मार्च 2021 को आयोजित चतुर्थ एवं अंतिम सत्र में संस्थान के कुलसचिव श्री रविंदर कुमार ने श्री अरविंद कुमार, सहायक निदेशक का धन्यवाद ज्ञापित किया और सभी प्रशिक्षणार्थियों को आगामी जुलाई माह 2021 में होनेवाली परीक्षा के लिए शुभकामनाएं दी साथ ही डॉ. गिरीश कठाणे, हिंदी अनुवादक का आंतरिक प्रशिक्षण कार्यक्रम का सफलतापूर्वक संचालन करने हेतु अभिनंदन किया।

संस्थान के कुलसचिव श्री रविंदर कुमार प्रशिक्षक महोदय का धन्यवाद ज्ञापित करते हुए।

5 दिवसीय आनलाइन अभिमुखी कार्यक्रम में संस्थान की सहभागिता

राजभाषा नीति के सफल कार्यान्वयन के उद्देश्य को केंद्र में रखते हुए केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार ने राजभाषा अधिकारियों हेतु 05 पूर्णदिवसीय आनलाइन अभिमुखी कार्यक्रम का आयोजन किया। यह अभिमुखी कार्यक्रम 15 मार्च 2021 से 19 मार्च 2021 तक आयोजित किया गया। इस 05 दिवसीय कार्यक्रम में संस्थान के हिंदी अनुवादक डॉ. गिरीश प्रमोदराव कठाणे को नामित किया गया था।

इस 05 दिवसीय आनलाइन अभिमुखी कार्यक्रम में विभिन्न विषयों पर कुल 9 सत्रों का आयोजन किया गया। जिसमें राजभाषा हिंदी की अद्यतन जानकारी, राजभाषा संबंधी दायित्वों से परिचय, राजभाषा नीति का सफल कार्यान्वयन, कंप्यूटर की आधारभूत जानकारी, राजभाषा विभाग द्वारा विकसित ई–टूल्स की जानकारी, प्रशिक्षण रोस्टर का रखरखाव, कार्यस्थल पर महिलाओं के साथ यौन उत्पीड़न तथा सूचना का अधिकार आदि विषयों का प्रमुखता से समावेश रहा।

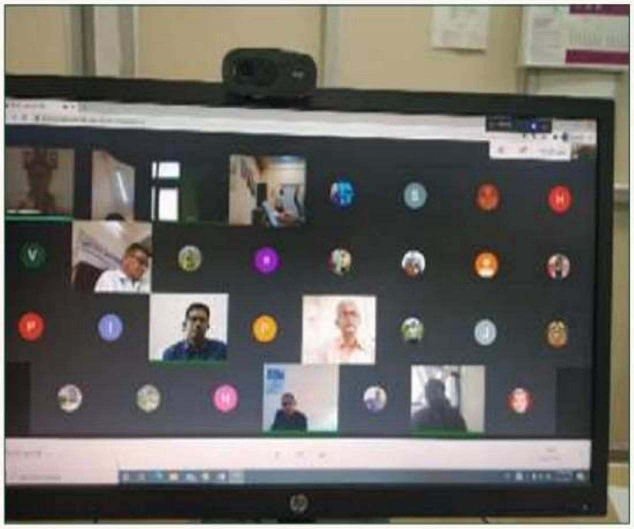

इस अभिमुखी कार्यक्रम में कुल 9 सत्रों हेतु 9 विशेषज्ञों द्वारा जानकारी दी गई। यह जानकारी राजभाषा अधिकारियों को उनके कार्यालयों में राजभाषा कार्यान्वयन को सुचारु रुप से लागू करने में सहायक सिद्ध होगी।

संस्थान की राजभाषा कार्यान्वयन समिति की आनलाइन 34वीं त्रैमासिक बैठक संपन्न

संस्थान के हिंदी के कार्यों की समीक्षा हेतु गठित राजभाषा कार्यान्वयन समिति की 34वीं त्रैमासिक बैठक दिनांक 03 मार्च, 2021 को संस्थान के कार्यवाहक निदेशक प्रो. पी. के. रैना की अध्यक्षता में संपन्न हुई। इस बैठक में जनवरी–मार्च तिमाही 2021 के कार्यों की समीक्षा की गई। इस बैठक में समिति के अध्यक्ष एवं संस्थान के निदेशक महोदय ने हिंदी प्रकोष्ठ के कार्यों की सराहना की तथा आगामी कार्य–योजना पर अपने विचार रखें।

दिनांक 12 मार्च 2021 को आनलाइन हिंदी कार्यशाला का आयोजन

हिंदी प्रकोष्ठ, भा.प्रौ.सं. रोपड़ ने दिनांक 12 मार्च, 2021 को आनलाइन माध्यम से "कोरोना से बचावः ज्ञान के प्रसार में हिंदी सशक्त माध्यम" विषय पर कार्यशाला का आयोजन किया। इस कार्यशाला में वक्ता के रुप में भा.प्रौ.सं. रोपड़ के प्रौद्योगिकी नवाचार हब के वरिष्ठ वैज्ञानिक अधिकारी डॉ. नरेश राखा थे।

कार्यशाला का औपचारिक स्वागत भाषण संस्थान के हिंदी अधिकारी श्री लगवीश कुमार ने किया। श्री लगवीश कुमार ने अपने स्वागत भाषण में कहा कि हिंदी प्रकोष्ठ, भा.प्रौ.सं. रोपड़ राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार के दिशा–निर्देशों के अनुपालन में प्रत्येक तिमाही में कार्यशाला का आयोजन करता आ रहा है। श्री लगवीश कुमार ने डॉ. नरेश राखा और उपस्थित सभी संस्थान सदस्यों का स्वागत किया।

डॉ. नरेश राखा जी ने अपने वक्तव्य में कई ऐसे उपायों को सभी के साथ साझा किया जिसके फलस्वरुप कोविड़ के दौरान हम अपनी सुरक्षा कर सकते है। डॉ. राखा जी ने अत्यंत सरल हिंदी में रोचक ढंग से अपनी बात रखते हुए कोविड़–19 के दौरान उनके और उनके समूह द्वारा किए गए अनुसंधानों के प्रतिफलन में बनाएं गए उपकरणों तथा इनकी सार्थकता पर प्रकाश ड़ाला जिसमें घर में उपयोग में लायी जाने वाली तमाम वस्तुओं को कीटाणु मुक्त करने हेतु यूवी ट्रंक, स्वास्थ्य कर्मचारियों को कोविड़ संक्रमण से बचाने हेतु डिफिंग चेंबर आदि का समावेश था।

डॉ. राखा जी ने टीकाकरण के इस दौर में सभी को इस बात से अवगत कराया कि भले ही कुछ लोग वैक्सीन ना लगायें और उनको कोरोना भी ना हो परंतु यह लोग वैक्सीन की श्रृंखला भंग करने के जिम्मेदार होंगे। डॉ. राखा जी ने सभी से यह आग्रह किया वे टीकाकरण को लेकर किसी भी प्रकार से आशंकितों को इस तथ्य से जागरुक कराएं और टीकाकरण के इस राष्ट्रीय उद्देश्य में अपनी भागीदारी सुनिश्चित करें।

कार्यशाला का समापन करते हुए संस्थान के हिंदी अनुवादक डॉ. गिरीश प्रमोदराव कठाणे ने डॉ. नरेश राखा और सभी उपस्थितों का धन्यवाद ज्ञापित किया।

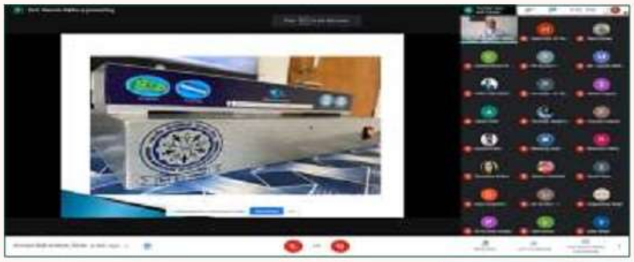

21 फरवरी, 2021 को भा. प्रौ. सं. रोपड़ में आनलाइन माध्यम से एक दिवसीय मातृभाषा दिवस का आयोजन

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान रोपड़ ने मातृभाषा दिवस उपलक्ष्य पर दिनांक 21 फरवरी, 2021 को एक दिवसीय मातृभाषा दिवस का अपने संस्थान में आयोजन किया। इस दो दिवसीय आयोजन में संस्थान के संकाय सदस्यों, अधिकारियों, कर्मचारियों तथा विद्यार्थियों के लिए मातृभाषा में कविता एवं गीत गायन प्रतियोगिता और मातृभाषा में भाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।

मातृभाषा में कविता एवं गीत गायन प्रतियोगिता तथा मातृभाषा में भाषण प्रतियोगिता में प्रतिभागियों ने अपनी– अपनी मातृभाषा जैसै कि पंजाबी, हिंदी, संथाली, कश्मीरी आदि भाषाओं में गीत गायन तथा भाषण दिया।

कविता एवं गीत गायन प्रतियोगिता के परीक्षक पैनल में डॉ. ब्रजेश रावत, सहायक प्राध्यापक, विद्युत अभियांत्रिकी विभाग और डॉ. शशि शेखर झा, सहायक प्राध्यापक, कंप्यूटर विज्ञान एवं अभियांत्रिकी विभाग थे। वहीं भाषण प्रतियोगिता के परीक्षक पैनल में डॉ. देवर्षि दास, सहायक प्राध्यापक, विद्युत अभियांत्रिकी विभाग तथा डॉ. अभिषेक तिवारी, सहायक प्राध्यापक, धातुकी एवं पदार्थ अभियांत्रिकी विभाग थे। इन प्रतियोगिता में संस्थान के सभी स्तरों से उत्साहजनक प्रतिभागिता देखी गई।

सुबह 10 बजे आयोजित मातृभाषा में कविता एवं गीत गायन प्रतियोगिता में **संकाय सदस्य/कर्मचारीगण की श्रेणी** में श्री विपिन (लेखा अधिकारी) को प्रथम पुरस्कार, श्री समनेन्द्र सिंह (कनिष्ठ अधीक्षक) को द्वितीय पुरस्कार, सुश्री हरप्रीत कौर (पुस्तकालय सूचना अधिकारी) और श्री संदीप सिंह (कनि. सहायक) को संयुक्त रुप से तृतीय पुरस्कार, डॉ. अभिषेक तिवारी (सहायक प्राध्यापक) और श्री नरिंदर कुमार (निर्माण प्रबंधन समूह) को संयुक्त रुप से प्रथम प्रोत्साहन पुरस्कार तथा श्री पुनीत गर्ग (सहायक कुलसचिव) और श्री अभिनव राज (कनि. अभियंता विद्युत) को संयुक्त रुप से द्वितीय प्रोत्साहन पुरस्कार प्रदान किया गया।

वहीं, **विद्यार्थी श्रेणी** में श्री अभिषेक कुमार (भौतिकी) को प्रथम पुरस्कार, श्री किष्ण के. द्विवेदी (जैवचिकित्सा अभि.) और श्री धीरज चमोली (यांत्रिक अभि.) को संयुक्त रुप से द्वितीय पुरस्कार, श्री जयेश भोजावत (गणित और अभिकलन), सुश्री प्रज्ञा शर्मा (भौतिकी), सुश्री संयुक्ता मरांडी (यांत्रिक अभि.) को संयुक्त रुप से तृतीय पुरस्कार, श्री दीपक कुमार (जैवचिकित्सा अभि.) और सुश्री मानसी सरदेसाई को संयुक्त रुप से प्रथम प्रोत्साहन पुरस्कार, तथा श्री सुप्रतीम हल्दार (भौतिकी) को द्वितीय प्रोत्साहन पुरस्कार प्रदान किया गया।

डॉ. अभिषेक तिवारी (सहायक प्राध्यापक, धातुकी एवं पदार्थ अभियांत्रिकी विभाग) गीत गायन करते हुए।

दोपहर 2.30 बजे आयोजित मातृभाषा में भाषण प्रतियोगिता में **संकाय सदस्य/कर्मचारीगण की श्रेणी** में श्री अभिनव राज (कनि. अभियंता विद्युत) को प्रथम पुरस्कार, श्री पुनीत गर्ग (सहायक कुलसचिव) को द्वितीय पुरस्कार तथा श्री विपिन कुमार (लेखा अधिकारी) को तृतीय पुरस्कार प्रदान किया गया

वहीं, **विद्यार्थी श्रेणी** में सुश्री अपूर्वा शेखर (मानविकी एवं सामाजिक विज्ञान) को प्रथम पुरस्कार, श्री ऋतभ किशोर (यांत्रिक अभि.) को द्वितीय पुरस्कार, श्री मनोज कुमार (विद्युत अभि.(को तृतीय पुरस्कार, सुश्री मानसी सरदेसाई (रासायनिक अभि.) को प्रथम प्रोत्साहन पुरस्कार तथा श्री जयेश भोजावत (गणित एवं अभिकलन) को द्वितीय प्रोत्साहन पुरस्कार प्रदान किया गया।

श्री अभिनव राज, (कनि. अभियंता, विद्युत) भाषण प्रतियोगिता में अपने विचार रखते हुए।

सुश्री अपूर्वा शेखर, छात्रा भाषण प्रतियोगिता में अपने विचार रखते हुए

भारत के 72वें गणतंत्र दिवस के उपलक्ष्य पर ऑनलाइन देशभक्ति गीत गायन प्रतियोगिता का आयोजन

भारत गणराज्य का 72वां गणतंत्र दिवस बड़े ही उत्साह के साथ मनाया गया। इसी उपलक्ष्य में, प्रति वर्ष की तरह इस वर्ष भी गणतंत्र दिवस के उपलक्ष्य पर भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान रोपड़ के हिंदी प्रकोष्ठ द्वारा आनलाइन माध्यम से संस्थान के सदस्यों के लिए दिनांक 22 जनवरी, 2021 को देशभक्ति गीत गायन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इस प्रतियोगिता में संस्थान के सभी स्तरों से उत्साहजनक प्रतिक्रिया प्राप्त हुई।

इस प्रतियोगिता में सभी प्रतिभागी विद्यार्थी एवं कर्मचारिगणों ने अपने देशभक्ति से ओत–प्रोत गीतों की प्रस्तुति के माध्यम से पूरा वातावरण देशभक्तिमय कर दिया। कुछ प्रतिभागियों ने देशभक्तिपरक प्रसिद्ध गीतों से समा बांधा तो कुछ ने स्वरचित गीतों से पूरे वातावरण को देशभक्ति के रंग से रंग दिया।

इस प्रतियोगिता में विद्यार्थियों में श्री ऋतभ किशोर (यांत्रिक अभियांत्रिकी) को प्रथम पुरस्कार, श्री नवनीत मिश्र (मानविकी एवं सामाजिक विज्ञान विभाग) को द्वितीय पुरस्कार, श्री आयुष प्रताप (धातुकी एवं पदार्थ अभियांत्रिकी) को तृतीय पुरस्कार, श्री ऋत्विक मुंजाल (यांत्रिक अभियांत्रिकी) और सुश्री अपूर्वा शेखर (मानविकी एवं सामाजिक विज्ञान) को संयुक्त रुप से प्रथम प्रोत्साहन पुरस्कार, तथा यांत्रिक अभियांत्रिकी के श्री अंकित चौहान और सुश्री संयुक्ता मरांडी को संयुक्त रुप से द्वितीय प्रोत्साहन पुरस्कार के लिए चयनित किया गया।

इसी प्रकार से कर्मचारियों में डॉ. अभिषेक तिवारी (सहायक प्राध्यापक, धातुकी एवं पदार्थ अभियांत्रिकी) और श्री विपिन कुमार (लेखा अधिकारी) को संयुक्त रुप से प्रथम पुरस्कार, श्री अभिनव राज (कनि. अभियंता विद्युत, कार्य एवं संपदा) और श्री विनय कुमार, (अभीक्षक) को संयुक्त रुप से द्वितीय पुरस्कार, श्री गगनदीप सिंह (कार्य एवं संपदा अनुभाग) और श्री तरविंदर सिंह हांडा (पुस्तकालय सूचना अधिकारी) को संयुक्त रुप से तृतीय पुरस्कार, श्री पुनीत गर्ग (सहायक कुलसचिव) को प्रथम पुरस्कार तथा श्री नरिंदर कुमार (कार्यालय सहायक, निर्माण प्रबंधन समूह/सीएमजी) को द्वितीय प्रोत्साहन पुरस्कार के लिए चयनित किया गया।

इस प्रतियोगिता के मूल्यांनक हेतु परीक्षक के रुप में मानविकी एवं सामाजिक विज्ञान विभाग के सहायक प्राध्यापक डॉ. भावेश गर्ग तथा लेखा अनुभाग के सहायक कुलसचिव श्री गौतम शर्मा आमंत्रित थे।

ऑनलाइन देशभक्ति गीत गायन प्रतियोगिता को समाप्ति की ओर ले जाते हुए डॉ. गिरीश प्रमोदराव कठाणे, (हिंदी अनुवादक, भा.प्रौ.सं. रोपड़) ने सभी प्रतिभागियों का आनलाइन माध्यम से अपने गीतों की उत्कृष्ट प्रस्तुति हेतु धन्यवाद ज्ञापित किया। साथ ही इस प्रतियोगिता के परीक्षक मंडल का भी धन्यवाद ज्ञापित किया।

श्री लगवीश कुमार, हिंदी अधिकारी, भा.प्रौ.सं. रोपड़ के मार्गदर्शन में इस ऑनलाइन देशभक्ति गीत गायन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।

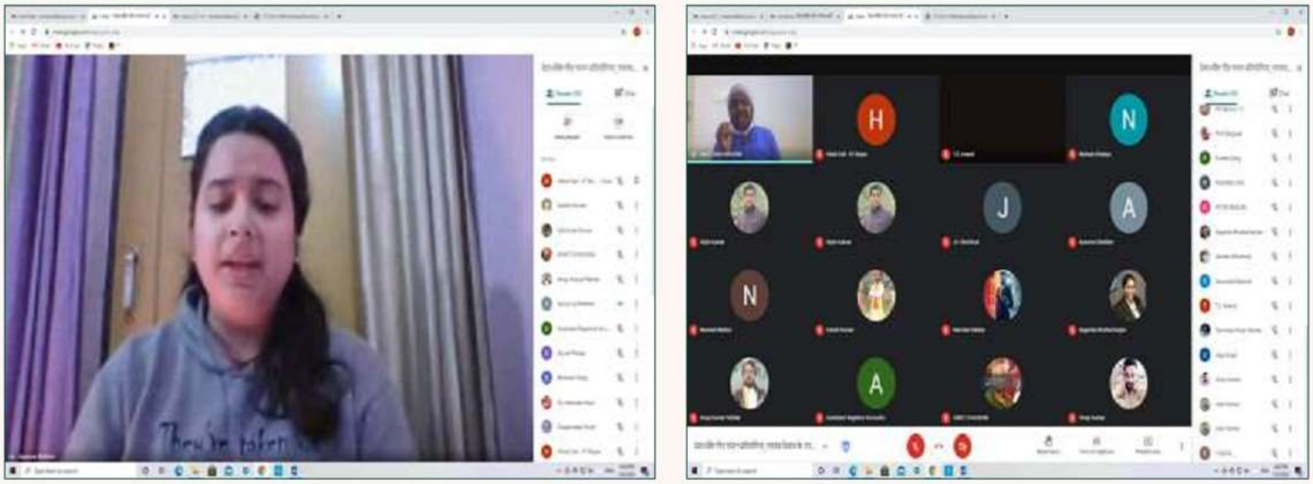

अपने गीतों की प्रस्तुति करते हुए विद्यार्थी तथा कर्मचारिगण

खामोशी

रोने की आवाज, कही खो गई।
जिद है अब भी, सब पाने की ,मगर सो गई।
हमारे आंखों के आंसू ,ओश हो गए,
हम बड़े हो गए ,खामोश हो गए।
खामोशी अमानत है,
खामोशी जमानत है,
खामोशी है उल्फत भी,
खामोशी इबादत है।

खामोशी में जाना हूँ,
कुछ लोगो को पहचाना हूँ,
खामोशी एक मोहलत है।
मै खामोशी का दीवाना हूँ।

खामोशी में सांसे है,
खामोशी में यादे है,
खामोशी है एक ठहराव,
गहरे खामोशी से नाते है ।
खामोशी एक शुरुआत हैं,
खामोशी ही अन्त है,
खामोशी अंतर्मन है,
खामोशी में उम्मीद है, अनंत है ।

खामोशी में आग है,
दिल मे जलता हुआ चिराग है,
खामोशी हर दर्द में,
सरगम की एक राग है ...।

खामोशी एक तहजीब है,
खामोशी कभी अजीब है,
खामोशी ही अनबन में,
जीने की तरकीब है।
खामोशी ही जिन्दगी है, और कभी कभी...
जिन्दगी खामोश है......

आयुष प्रताप (आयु)
पीएच. डी. शोधार्थी,
धातुकी एवं पदार्थ अभियांत्रिकी विभाग

अंचल मन

अंचल मन
चंचल चितवन
खेले खूब
न सोये तन
खबर सुन
पछताता अब
न चलता रण
न चलता पवन
चिंतित मन
अस्थिर चितवन
सुद बुद्द खोये
न जाने कितने तन
सोते जागते दिखता क्रुन्दन
स्थिरता का न दिखता प्रसंग
अभी रंगों की बिसात भी न धुली कहीं
चिराग बुझते जा रहे
जैसे बरसों की हो जंग।
आस्था भी है चुप
आस्थिक भी खामोश
राजनीति के मुरीद भी हैं बेसुद
शहंशाह भी है गुम
कहीं खुद ही खुद।
वायदे हैं अभी भी पन्नो में
सरजमीं पे तो बस आँसुओ की हैं चिताएं
अभी छानी है ऑक्सीजन की खोज मंगल पे
धरती पे बस खोजना बाकी है।

चिंतित मन
अस्थिर चितवन..

सच्चिदानंद कुशवाहा
पीएच. डी. शोधार्थी
सिविल अभियांत्रिकी विभाग

कोरोना योद्धाओं को समर्पित

खुद को भूल कर देश को बचाने चल दिए,
लगा दी अपनी भी जिंदगी, सभी के जिंदगी बचाने चल दिए,
खुद ही कुर्बान हो गए, देश को बचाने के लिए,
देश है तो हम है, हम तो सब है
ये सोच के खुद को, मिटाने चल दिए.
खुद को भूल कर देश को बचाने चल दिए..
अपनी जिंदगी को देश पर लुटाने चल दिए,
कभी इधर से कभी उधार, अपने देश को संकेत में देख कर घबड़ा तो गए,
पर हिम्मत ना हार कर खुद को लुटाने ही चल दिए,
देश से मिले प्यार को अपनी हिम्मत बनाकर चल दिए,
अपनो के दिए हुए नाम "कोरोना वारियॉर्स" के इज्जत बचाने चल दिए,
खुद को भूल कर देश को बचाने चल दिए..
आसन नहीं थे ये जंग, हम लड़े और सबके साथ मिलकर चले दिए,
कुछ अपनो को खोया और कुछ अपना को बचा कर चल दिए,
यू वह नहीं चला ये सफर, सब कुछ अपना लुटा कर ही चल दिए,
अपने देश को अपना घर बनाना कर और अपने घर को भुला कर चल दिए,
खुद को भूल कर देश को बचपने चल दिए..
अपनी जिंदगी को देश पर लुटाने चल दिए..

चंद्रशेखर
पीएच. डी. शोधार्थी
रसायनिक अभियांत्रिकी विभाग

धारामंथन

अस्थिर मन में सावन मेरे धाराएँ कुछ अपनों की
दूर वीरानी बजती वीणा स्वर सहलाती सपनों की
ना मै स्थावर तू भी चंचल जीवन अपना तारामंडल
प्रति क्षण तेरी स्मृति की बूंदे बरसाता मै छोटा बादल

दो हृदयों में एक चेतना कंपन करते तनमन भीतर
मधुरस टूटे प्याले में तू, गुंजन करता भ्रमर मनोहर
शब्दों के भी पार भावना इस कविता के कण–कण में तू
शब्दों में ही उलझा सुलझा इनमें बंधे किन्तु–परंतु

बिगुल बजाऊँ इच्छाओं का शस्त्र उठाऊँ स्याही के
धारा मंथन शब्दों का और फूल सुगंधित काव्यों के
रेशम के धागे सा निर्मल, विस्तृत जैसे शांत हिमालय
पावन जैसी तपती अग्नि, प्रेम हमारा गंगा का जल

शरीरों से भी भिन्न परंतु आत्मा मेरी तुझमे बसती
मीरा मंदिर गाने गाती, जैसे शक्कर जल में घुलती
आँगन में एक सुखा पौधा उसकी जड़ में मुझको पाना
गरज गरज फिर बरखा करते उन मेघों संग तू भी आना

जितेंदर
पीएच. डी. शोधार्थी
यांत्रिक अभियांत्रिकी विभाग

जा रहा हूँ अपने घर...

जा रहा हूँ अपने घर अपना शहर बचा के रखना
अमीरों की बस्ती है, अमीरों से बचा के रखना

काम करते– करते, जी हुजूरी में निकल गए कई साल मेरे
रोटी नसीब नहीं हुई हफ्तों से, ऐसे हैं फिर ये हाल मेरे

जा रहा हूँ पैदल, बीमारी से तुम अपना ध्यान खास रखना
खुला है ये आसमान, ये आसमान अपने पास रखना

बच्चों के आँशु पोछने के लिए, ये गीली कमीज है मेरे पास
चुप चाप निकल जाऊँगा जाने देना, इतनी तमीज है मेरे पास

जा रहा हूँ मिलों दूर, अपना पैसा अपने पास रखना
तौला था जिस तराजू में, वो तराजू आस–पास रखना

थोड़ा ही दूर और जाना है, ये कह कर ही निकल था मैं
शरीर तो पत्थर का था, भूख से ही तो पिघला था मैं

जा रहा हूँ भरी दोपहर में, ठंडक को तुम अपने हाथ रखना
दे दो दिनभर के लिए सूरज, सुबह का सूरज अपने साथ रखना

जा रहा हूँ मिलों दूर, अपना शहर बचा के रखना
अमीरों की बस्ती है, अमीरों से बचा के रखना।।

शुभम जैन
पीएच. डी. शोधार्थी
सिविल अभियांत्रिकी विभाग

संरक्षक संपादक
प्रो. राजीव आहूजा
निदेशक,
भा.प्रौ.सं.रोपड़

परामर्शदाता संपादक
डॉ. अरविंद कुमार गुप्ता
संकाय प्रभारी (हिन्दी)

श्री लगवीश कुमार
हिन्दी अधिकारी तथा संयुक्त कुलसचिव
भा.प्रौ.सं.रोपड़

संपादक
डॉ. गिरीश प्रमोदराव कठाणे
हिन्दी अनुवादक,
भा.प्रौ.सं.रोपड़

अभिकल्प, प्रकाशन एवं मुद्रण
सुश्री प्रीतेंदर कौर
जनसंपर्क अधिकारी, भा.प्रौ.सं.रोपड़
संपादन सहयोग
श्री ऋतभ किशोर
छात्र समन्वयक (संगम पत्रिका),
पीएच. डी. शोधार्थी, यांत्रिक अभि. विभाग, भा.प्रौ.सं.रोपड़